अथ चतुर्दशोऽध्यायः

चोधमाँ तीन गुणाँ का सरूप अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि, ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे, परां सिद्धिमितो गताः।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(परम ग्यान की करी बडाई)

भोत्तै फेर बताऊँ गा मैँ, ग्यान्नाँ मैँ ग्यान कती आच्छा।
'परम' परम ब्रह्म तत्त्व की जो, होवै समझ निजी अनुभव सै।।
'उत्तम' न्यूँ जो उत्तम फळ दे, जलम-मरण तैँ मुक्ति करावै।
जिस नै पा कैँ, जाण समझ कैँ, दुनियादारी तज मौन धरै।।
आप्णै मैँ ए लीन मस्त हो, बाहर जा जो सुख नाँ खोज्जै।
मुनियाँ सार्याँ नै 'पर' ऊँच्ची, मुक्ती इत तैँ जा कैँ पाई।।
सुख, दुख, इच्छा, राग, द्वेस अर, सोग, मोह तैँ छूट सबै वैँ।
जलम-मरण कै बन्धन तैँ बी, छूट्टे अर ब्रह्म परम होगे।। १

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य, मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते, प्रलये न व्यथन्ति च।। २

न्यूँ जाणन का आस्रै ले कैँ, मेर्याँ जिसे धरम गुण पाए।
मैँ ए बण गे सारे मुनि वैँ, स्रिस्टि समै बी नाँ वैँ जाम्मैँ।
परळै मैँ नाँ भय दुख पान्दे।। २

मम योनिर्महद् ब्रह्म, तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम्।
संभवः सर्वभूतानां, ततो भवति भारत।। ३

(महत् प्रक्रिति तैँ जलम सबै का)

मेरी 'योनी' गर्भ-धारणी, प्रक्रिती, माया, अव्यक्त त्रिगुण।
'महत्' सबै तैँ पूज्य बडी वा, 'ब्रह्म' विवर्धन, बर्धन कर कैँ।।

उस मैँ गर्भ धरूँ सूँ मैँ जिब, जलम सबै भूताँ का उस तैँ।
होवै 'भारत' भरत-बंस मैँ, जाम्मे, उस के गौरव अर्जन।। ३

सर्वयोनिषु कौन्तेय, मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महद् योनिरहं बीजप्रदः पिता।। ४

देव, पितर, माणस, पसु, पञ्छी, जङ्गम थावर सबै तह्माँ की।
जूण जगत मैँ, उन मैँ अर्जन, कुन्ती के सुत, मूरत होवैँ।।
आकार प्रगट होवैँ जो सैँ, देस काळ तैँ ऊप्पर बड्डा।
उन सब का बिस्तार करणियाँ, ब्रह्म महद् मैँ पूज्य सबै का।।
गर्भधारणी माँ बी मैँ सूँ, बीज बोणियाँ बाप तथा मैँ।
पालक इन सब का ए मैँ सूँ।। ४

सत्त्वं रजस्तम इति, गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो, देहे देहिनमव्ययम्।। ५

(सत रज तम सैँ तीन जेवड़ी)

सत् रज तम ये गुण सैँ तीन्नूँ, प्रक्रिति सुभा मैँ मूळ ततव मैँ।
होणै आळे रहँदे कट्ठे, सबै बरोब्बर जिब सैँ तीन्नूँ।।
व्यक्त, स्पस्ट नाँ किम्मे होन्दा, 'अव्यक्त' कुहावैँ मिल-जुल कैँ।
कारण 'प्रक्रिती' उपादान ये, उसै बरोब्बर की स्थिति तैँ जिब।।
हलचल होवै विसम बणन नै, 'क्सोभ' कुहाई स्थिति या इन की।
इस्सै स्थिति मैँ न्यारे-न्यारे, व्यक्त प्रकट ये प्रथम बणैँ।।
प्रतिभान, प्रतीती अलग-अलग की, बिसम बणे पै ए या होई।
कपिल मुनी के साङ्ख्य सास्त्र मैँ, जिकर नहीँ सै इस का कोए।।
उन तैँ पहले थी या बोल्ली, 'प्रतिभा' कह कैँ यास्क मुनी नै।
बोल्ली स्थिति वा 'महत्' साङ्ख्य मैँ, उस तैँ ए ये तीन 'अहंक्रिति'।।
बण कैँ बान्धै सारै जग नै, वीर पराक्रमि भुजा धारदे।
अर्जन परगट काया बण ये, बाँद्धै उस मैँ चेतन घन नै।।
कायास्वामी अविकारी नै।। ५

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्, प्रकाशकमनामयम्।
सुखसङ्गेन बध्नाति, ज्ञानसङ्गेन चानघ।। ६

(आत्मा नै गुण क्यूँक्कर बान्धैं)

[१]इन मैं सत निर्मल होणैं तैं, असल छुपान्दे सब दोस्साँ तैं।
रहित प्रकासित करदा अर सै, 'आमय' दोस किमे नाँ इस मैं।।
मन कै ल्याए सुख दुख सारे, इस मैं झळकैं, इस तैं इन नै।
आप्णा ए यो समझ[१] 'सुखी मैं', 'दुखिया मैं सूँ', सुख मैं दुख मैं।।
आप्णैपण कै सँग कै कारण, बान्द्धै सै यो आत्मदेव नै।
मारै सै जो सारी तह्नियाँ, नीच्चै गेरै माणस नै सै।।
इसै 'पाप' तैं, 'अघ' तैं खाल्ली, अर्जन, अर यो ग्यान[२] सङ्ग तैं।
'मैं सूँ ज्ञाता, समझूँ सब सूँ', 'नाँ मैं जाणूँ, परम अनाड़ी'।।
निर्मल बुद्धी मैं न्यूँ प्रगट्यै, ग्यान अग्यान मैं आसक्ती तैं।
बान्द्धै सै यो आत्मदेव नै।। ६

रजो रागात्मकं विद्धि, तृष्णासङ्गसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय, कर्मसङ्गेन देहिनम्।। ७

[२]'रजस्' भाव यो रँग ले सब कुछ, अनुरूप ढळै अर ढाळै यो।
'राग' लगाव भाव यो हो सै, इच्छा तिस्णा आसक्ती अर।।
लोभ भाव नै करदा उत्पन, वो बाँद्धै अर्जन, कर्मा मैं।
मनसाराम लगा आतम नै।। ७

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि, मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्, तन्निबध्नाति भारत।। ८

[३]'तमो' भाव तो नाँ-समझी तैं, प्रगट्या जाण समझ, [१]विवेक नै।
दूर हटा भरमावै सै यो, सबबिध काया धरद्याँ नै।।
[२]सही समै पै कर्तब पै जो, ध्यान न देणा 'परमाद' कहैं।
[३]अळकस, जड़ता च्यारूँ कान्हीं, परभाव दिखावै सै भारी।।
सतगुण कारज ग्यान च्यानणा, राजस चेस्टा व्रित्ती रोक्कै।
[४]'नींद' गिरा या बेबस करदी, ग्यान बिना सै, चेस्टा रोक्कै।।

सत् अर रज की कती विरोधी, तामस भाव अँधेरा करदा।
ये सब पैदा कर कै बान्द्धै, माणस नै यो भारत अर्जन।। ८

सत्त्वं सुखे संजयति, रजः कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः, प्रमादे संजयत्युत।। ९

(क) प्रकास ज्ञान जो देवै सत वो, सुख मैं जोड़ै, बान्द्धै उस मैं।
(ख) चेस्टा उद्यम करणै मैं सै, रज यो बान्द्धै भारत अर्जन।।
(ग) परकास ग्यान पै छा कै पर, तम प्रमाद मैं 'गफलत' मैं बी।
गेर फँसावै जीत्तै सै नर नै॥ ९

रजस्तमश्चाभिभूय, सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।। १०

(ठाड्डा गुण सै दो नै दाब्बै)

(क) रज अर तम नै निर्बळ कर कैं, सत्त्व प्रबळ हो सै रै अर्जन।
(ख) रज बी सत नै अर तम नै सै, निर्बळ कर कैं बणदा परबळ।
(ग) तम कर निर्बळ सत अर रज नै, होवै परबळ दोन्हूँ पै ए॥ १०

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्, प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा, तदा विद्याद्, विवृद्धं सत्त्वमित्युत। ११

(गुण बढणै के लच्छण)

[१]सारे दरवाज्याँ मैं अर इस, कायापुर मैं ग्यान च्यानणा।
हो जिब, तद जाणै सत बढ ग्या, आँख नाक अर कान तीन के।।
दो-दो दरवज्जे मिल छह सैं, एक दुरज्जा मुँह का अर सै।
काम करै पर दो यो न्यारे, सबद उचारित इस मैं गूँजै।।
स्वाद ग्यान बी इस मैं होवै, मोरीगेट बणे दो तन मैं।
मळ अर मूत्तर इन तैं लिकड़ै, हिरदै का बी एक दुरज्जा।।
सब तैं ऊप्पर ब्रह्मरन्ध्र मैं, बुद्धी राणी जित सै बैट्ठी।
आपणै राज्जा आत्मदेव नै, इन दरवज्याँ मैं ले भरमावै।।
सत गुण हो सै बणदा ठाड्ढा, रज तम नै जिब नीच्चै गेरै।
परकास चाँदणा खुसियाँ का, होवै ग्यान प्रकासित अर सै॥ ११

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः, कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते, विवृद्धे भरतर्षभ।।१२

[१]लालच, [२]चेस्टा, उद्यम, [३]आरँभ, कमाँ का, [४]बेचैन्नी, [५]त्रिस्णा।
रजोभाव कै बढणै पै ये, व्रित्ति मनुख मैं पैदा हो सैं।
भरतबंस मैं उत्तम अर्जन, देख परख तैं इन बात्ताँ नै॥ १२

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च, प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते, विवृद्धे कुरुनन्दन।। १३

[१]अन्धेरा-सा मन मैं छा ज्या, [२]काम करै नाँ, रहँदा निठला।
[३]करण जोग पै ध्यान रहै नाँ, सही समै पै गफलत हो ज्या।।
[४]सोच्च्यैं बी नाँ रस्ता पावै, इसा भरम अर ममता बढ ज्या।
तमस् भाव कै बढणै पै ये, दोस मनुख मैं पैदा होवैं।
कुरुआँ नै हे खुस करणाळे।। १३

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु, प्रलयं याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां लोकानमलान् प्रतिपद्यते।। १४

(माणस मैं गुणब्रिद्धी का फळ)

[१]हौंस मनुख नै आवै जिब तैं, अभ्यास करण तैं, गुरुआँ की।
अर देवाँ की किरपा पा कैं, प्रारब्धभोग तैं सैं सात्त्विक।।
भाव बढै जिद चित मैं तद जो, काया-नगरी छोड सिधारै।
राज्जा इस का ओर नगर मैं, उत्तम तत्त्व 'महद्' जो कारज।।
उस की विक्किति तीन अहङ्कृति, जन-मन मैं जो तीन देवते।
ब्रह्मा, बिस्णू, सिव अर उन से, देवाँ नै जो जाणैं उन की।
भक्ती करदे लोग्गाँ कै वो, निर्मल लोक्काँ नै जावै सै।। १४

रजसि प्रलयं गत्वा, कर्मसङ्गिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि, मूढयोनिषु जायते।। १५

[२]रजोभाव जिब बढ्या घणा हो, इसै समै मैं मर कैं माणस।
करमाँ मैं अर, उन कै फळ मैं, फँस्याँ, धँस्याँ मैं पैदा हो सै।।
[३]न्यूँ ए मरदा तमोभाव की, व्रिद्धी मैं जा मोह-धँसी उन।

जूणाँ मैं जित ग्यान जोत सै, जमा नहीं, हो घोर अँधेरा॥ १५

कर्मणः सुकृतस्याहुः, सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।। १६

(तीन गुणाँ के कमाँ के फळ)

[१]करम कर्‌या जो आच्छा, उस का, कहँदे सात्त्विक निर्मळ फळ सै।
[२]रज का फळ तो दुख सैं कहँदे, [३]अग्ग्यान अँधेरा फळ तम का॥ १६

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं, रजसो लोभ एवं च।
प्रमादमोहौ तमसो, भवतोऽज्ञानमेव च।। १७

[१]सत्त्व भाव तैं ग्यान प्रकासै, [२]रजो भाव तैं लोब्भै हो सै।
[३]कारज करणा जो हो, उस मैं, मन नाँ लाग्गै, गफलत हो अर।
मोह अँधेरा भरम घणेरा, तम तैं होवैं अग्ग्यान तथा॥ १७

ऊर्ध्वं गच्छतिन्त सत्त्वस्था, मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था, अधो गच्छन्ति तामसाः।। १८

(किस गुण तैं माणस की के गति)

[१]ऊप्पर, आच्छै लोक, जूण मैं, आच्छी स्थिति मैं जावैं, करदे।
करम ओर जो उन्नति करणे, ग्यान सम्पदा मान बढाँदे।।
सत्त्व भाव मैं रहँदे माणस, [२]नाँ ए ऊप्पर नाँ ए नीच्चै।
बीच जूण मैं जा कैं रहँदे, पेट-पाळदे मीन्हत कर कैं।।
रजोभाव सै जिन का परबल, [३]नीच तमोगुण व्रित्ती आळे।
माणस टिकदे नीच चरित्तर, बुरे करम हौं उन के सारे।।
जावैं नीच्ची घणी जूण मैं, तमोभाव सै जिन का परबल।
नीच बिचार करम हौं उन के॥ १८

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं, यदा द्रष्टानुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति, मद्भावं सोऽधिगच्छति॥ १९

(कोण बणै ब्रह्मरूप सै)

नाँ ओर किसै नै तीन गुणाँ तैं, कर्ता सै जिब द्रष्टा देक्खै।
बुद्धी मैं जो झळक्या जीवा, उस मैं ल्याए कर्म ग्यान नै।

ओर गुणाँ तैँ ऊप्पर कै नै, जाणै 'मैँ' ए वो हो ज्या सै॥ १९

गुणानेतानतीत्य त्रीन्, देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्, विमुक्तोऽमृतमश्नुते।। २०

कायापुर का मालक जीवा, कायापुर यो बणदा जिन तैँ।
उन तीन गुणाँ नै पाच्छै कर, जलम मरण अर इन कै बीच्चूँ।।
जीरण करदै दुस्ट बुढाप्पै, बाळकपण अर जोब्बण मैँ जो।
होन्दे सारे दुख अर सुख सैँ, उन तैँ छूट्टया इमरत पीवै।।
जीन्दै-जी वो, देह धर्‌यैँ बी, इस कै कर्माँ कै बन्धन मैँ।
नाँ ए पड़दा, नाँ वो लेवै, जलम फेर सै कट्ठे होए।
कर्माँ के फळ भोग्गण खात्तर, जलम मरण तैँ न्यूँ वो छूट्टै।। २०

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्, त्रीन् गुणानतिवर्तते।। २१

अर्जन बोल्ल्या

(तीन सुवाल करे अर्जन नै)

[१]के सैँ लच्छण उन के जिन तैँ, तीन गुणाँ नै पार करणियाँ।
जाण्या जा सै परभू किरसण?, [२]के ब्योहार करै वो अर सै?।।
किसा आचरण? चाल-ढाळ के?, [३]क्यूक्कर अर इन तीन गुणाँ नै।
कर कैँ पार रहै वो माणस?, सँसै मेरे दूर हटा ये॥ २१

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं, च मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि, न निवृत्तानि काङ्क्षति।। २२

स्रीभगुवान् बोल्ले

(जबाब दिये किरसण जी नै)

[१]प्रकास, च्याँनणा, अग्ग्यान हटा, ग्यान प्रकासित करणा सात्त्विक।
उस तैँ बी अर उद्यम, चेस्टा, तन,मन, बुद्धी की सब किरिया।।
राजस सैँ ये इन तैँ बी अर, मोह, अँधेरा, हो नाँ निर्णै।

चेस्टा तो फिर होँगी कित तैँ?, अळकस गफलत दोस बड़े ये।।
चिह्न तमोगुण के सैँ, इन तैँ, निर्मल सुद्ध सुभावी, पाण्डू।
छत्री राजा के हे बेट्टे, जिब ये होवैँ, इन सार्‌याँ तैँ।।
नाँ द्वेस करै, होणै देवै, खतम जिदै ये हो ज्याँ, तो नाँ।
चाह्वै इन नै, सैँ ये सारे, ओराँ नै बी दीक्खण आळे।
सारे लच्छण उस के छूट्टया, जो सै इस तिलड़ी रस्सी तैँ॥ २२

उदासीनवदासीनो, गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव, योऽवतिष्ठति नेङ्गते।। २३

[२]बहँदै जल तैँ दूर किनारै, बैट्ठ्या-सा जो बैट्ठ्या माणस।
तीन गुणाँ कै भावाँ ऊप्पर, बैट्ठ्या इन तैँ दूर रहणियाँ।।
तीन गुणाँ तैँ जो नाँ बिचळै, कदै प्रभावित उन तैँ नाँ हो।
'गुण ये आप्णा काम करैँ सैँ', इसा मान जो बैट्ठ्या ह्वै सै।।
कुछ बी इन नै टाळण खात्तर, हरकत नाँ सै करदा माणस।
साच्चा लच्छण यो सै उस का, जो वो खुद तैँ महसूस करै।। २३

समदुःखसुखः स्वस्थः, समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्, तुल्यनिन्दाऽऽत्मसंस्तुतिः।। २४

एक-जिसा रहँदा सुख-दुख मैँ, निज स्वरूप मैँ, आनँद मैँ जो।
टिक्या रहे सै नित्य निरन्तर, आच्छी-भूण्डी सारी स्थिति मैँ।।
डळा, पाथरा, स्योन्नै नै जो, समान मानदा, प्रिय अर अप्प्रिय।
एक तोल के दोन्नूँ जिस नै, टिकी लक्स्य पै बुद्धी आळा।।
धीरज राक्खै बिगड़ी स्थिति मैँ, एक तोल हौँ, एक मोल हौँ।
बिसराण्हा, बडियाई खुद की।। २४

मानापमानयोस्तुल्यस्, तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी, गुणातीतः स उच्यते।। २५

आद्दर, मान'र हार साल पा, गाळी, धक्के ओर अनादर।
दोन्नूँ राक्खै एक ऊँचाई, पलड़े दो ज्यूँ ताक्खड़ियाँ के दो।।
मित्तर प्यारे अर दुस्मन सैँ, एक पालड़ै तोल्ले जिस नै।

स्याम्हीँ दिखदे ल्हुके-छिपे अर, आच्छे-माड़े, सुख-दुख देन्दे।।
सारे आरँभ काम छोड़दा, मन तैँ उन नै बाहर करदा।
तीन गुणाँ तैँ दूर मनुख वो, तिलड़ी रस्सी तैँ नाँ बँधदा।
बोल्क्या जान्दा अर्जन, सुण ले॥ २५

मां च योऽव्यभिचारेण, भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते।। २६

[३]मन्नै बी जो ओर किसै नै, नाँ जान्दै भक्ति-भाव तैँ सै।
सेवै माणस, वो इन तीन्नूँ, सत रज अर तम सबै गुणाँ नै।
तज कैँ, पाच्छै छोड आपणै, ब्रह्म होण मैँ समरथ हो सै॥ २६

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य, सुखस्यैकान्तिकस्य च।। २७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः।। १४।।

(टिक्या सबै कुछ जिस पै, मैँ वो)

क्यूँकी 'अम्रित', कदे न मरदे, 'अव्यय' अविकारी, अविनासी।
'सास्वत' नित्य, सनातन अर जो, 'धर्म' धारदै इस दुनियाँ नै।।
ओर कितै जो नाँ ए मिलदा, एक ओड़ सूँ मैँ ए जिस का।
इस तह्रियाँ कै सुख आनँद की, 'ब्रह्म' बृहद् जो बर्हण ब्रिद्धी।।
उत्पत्ति स्थिति अर लय सै करदा, मैँ सूँ उस की एक 'प्रतिष्ठा'।
टिक्या सबै कुछ जिस पै मैँ वो, अर्पित कर उस परमेसर नै।
आप्णे सारे भाव जगत् के, कर तैँ अर्पित करतब अर्जन॥ २७

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ चोधमाँ अद्ध्याय पूरा होया।। १४।।

पूर्वसलोकयोग ५२३ + २७ = ५५०